बाल साहित्य समीक्षा में इस बार प्रस्तुत है रूम टू रीड द्वारा प्रकाशित बच्चों की कहानी एवं विज्ञान पुस्तकों की समीक्षा। समीक्षा में दिए गए चित्र इन्ही पुस्तकों से लिए गए हैं।

बच्चों के लिए कुछ पुस्तकें

❑ मनोज कुमार

बाल साहित्य नामक संज्ञा साहित्य के आगे बाल विशेषण लगाने से आती है। आमतौर पर इसका मतलब होता है ऐसा साहित्य जो वयस्कों द्वारा बच्चों के मनोरजंन हेतु लिखा जाए। उम्र के आधार पर साहित्य की विशेषता कम ही दिखाई जाती है। प्रौढ़ साहित्य, वृद्ध साहित्य, जैसे पद प्रचलन में नहीं हैं। अलबत्ता सामाजिक या आर्थिक विषमता की विशेषता के आधार पर साहित्य देखने को मिलता है जैसे दलित साहित्य।

बाल साहित्य की प्रचलित विशेषताएं इस प्रकार गिनाई जा सकती हैं - 1. बाल कविताएं आमतौर पर मौसमी बीमारी के तौर पर लिखी जाती हैं। जैसे - गर्मी आई गर्मी आई, या सर्दी आई सर्दी आई या बारिश आई बारिश आई। 2. बाल कहानी व कविता दोनों में जानवरों का मानवीकरण करके उनकी हरकतों के वर्णन से मनोरंजन किया जाता है या सीख दी जाती है जैसे बंदर की बारात, हाथी का पाजामा, चूहे को बुखार इसमें वर्णन की चुहलता से मनोरंजन किया जाता है। या फिर खरगोश की चतुराई कहानियां।

बाल साहित्य यूं एकांगी पद नहीं है क्योंकि यहां जो बाल विशेषण है उसमें बोलना सीख रहे बच्चे हैं, पढ़ना सीख रहे बच्चे हैं, या जिनकी उम्र तीन से पांच तक है वे बच्चे हैं। यह साहित्य ज्यादातर वाचिक है। यानी अगर इनके लिए कुछ लिखा भी जाता है तो बच्चों के मां- बाप अपने बच्चों को पढ़कर अपने स्वर के आरोह-अवरोह द्वारा व अपने अभिनय द्वारा सुनाते हैं।

जिन अभिभावकों को इस प्रकार के वाचन का कुछ अनुभव है वे इतना तो स्वीकार करेंगे ही कि यह काफी धैर्य का काम है और अगर आप को इसमें खुद आनंद नहीं आता तो आप खीझ उठेंगे और संभव है कि जिसे आप बच्चे के लिए अच्छा या मनोरंजक समझ कर उसे सुनाने बैठें उसे वो बिल्कुल पसंद न आए और वो आपकी नजर में किसी फालतू कहानी या कविता को सुनने की जिद, और वो भी बार-बार कर बैठे।

इसके बाद ऐसे बच्चों को लिया जा सकता है जो खुद पढ़कर कविता कहानी का आनंद उठा सकते हैं। आमतौर पर बच्चों की किताबें मोटे टाइप में होती हैं और वो मनोरंजक चित्रों से सुसज्जित होती हैं। टाइप का मोटा होना व चित्रों का होना क्यों जरूरी है इसका एक अनुभव मुझे तब हुआ जब मैंने एक नई भाषा सीखनी शुरू की। और जब आप पढ़ना सीखते हैं तो मोटे टाइप से उसमें आसानी होती है। चित्रों के होने से मुद्रित अंश कम बोझिल लगता है, जब हमें पढ़ने का अभ्यास हो चुका होता है तो हम उस मुद्रित अंश को अंदाजे से ही पढ़ते हैं और प्रत्येक अक्षर पर हमारी नजर नहीं ठहरती। पर जब आप वर्णमाला सीखकर पढ़ने बैठते हैं तो आप अक्षर को पहचानकर उन्हें आपस में जोड़कर शब्द बनाते हैं और ऐसे में यदि टाइप मोटा हो तो पढ़ने में आसानी होती है। साथ ही पृष्ठ में मुद्रित शब्दों की संख्या कम हो और चित्र हों तो पढ़ने का उत्साह आता है। इस तरह के बच्चों की उम्र 5 से 8 रखी जा सकती है।

तीसरी श्रेणी में ऐसे बच्चे आते हैं जो पढ़ना पर्याप्त सीख चुके हैं, जिन्हें स्कूल जाने का, परिवार के मसलों, पड़ौसियों और अन्य दुनियावी व्यापारों से साबका पड़ चुका है। इन बच्चों की उम्र 8 से 14 के बीच रखी जा सकती है। ये बचपन से किशोरावस्था का संक्रमण काल है, यही बच्चे आगे चलकर तथाकथित वयस्क साहित्य (हालांकि ऐसी कोई संज्ञा प्रचलन में नहीं है) के पाठक बनते हैं।

बहरहाल रूम टू रीड, जिसका लक्ष्य समाज के शोषित व पिछड़े वर्गों के बच्चों को शिक्षा के अवसर प्रदान करना है, ने कुछ पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इन्हीं पुस्तकों के विषय में यहां लिखा जा

रहा है।

'बुरे दिन और रुपयों का घडा' कुंती रामदत्त बालकरन द्वारा लिखी गई पुस्तक है। पुस्तक का विषय वही पारंपरिक है, 'बुरे दिन के बारे में बच्चे का भोलापन, फिर उसका साहस और उसकी चतुराई कहानी का विषय है। कहानी कुछ इस प्रकार है - देवी को झाड़ू लगाते हुए रुपयों का एक घड़ा बाबा-पिता-के पलंग के नीचे मिलता है। 'रुपयों का घड़ा भला ऐसे कौन रखता है !' उसके पिता ये रुपये बुरे समय के लिए बचाते थे। देवी सोचती है, ''बुरे दिन जरूर कोई खास आदमी होगा।'' कुएं के घाट पर एक बुढ़िया कहती है कि बुरे दिन आने वाले हैं। देवी अपनी मासूमियत में कहती है, ''मेरे बाबा ने बुरे दिन के लिए काफी रुपये अलग से रखे हैं।'' संयोग से एक चोर यह सब सुन रहा होता है। और वह देवी के घर आकर रुपयों का घड़ा ले जाता है। मजेदार बात यह है कि देवी के मन की बात चोर पहले ही जान लेता है कि बुरे दिन जरूर कोई खास व्यक्ति होगा। बाबा और भाई को घर आने पर जब यह पता चलता है तो देवी बैलगाड़ी लेकर रुपये वापस लेने चल पड़ती है। ये भी संयोग है कि वह चोर का पता लगा लेती है और एक तरकीब से रुपयों का घड़ा वापस ले आती है।

समस्या यही है। हमारे बाल साहित्य में बच्चों की कुछ विरोधाभासी तस्वीरें एक साथ आती हैं। मैं नहीं जानता, बच्चे अपनी इन विरोधाभासी तस्वीरों को कैसे ग्रहण करते होंगे। एक तरफ देवी में सामान्य बोध (कॉमनसेंस) का भी अभाव नजर आता है और दूसरी तरफ वह अपनी चतुराई से रुपये वापस भी ले आती है। सब कुछ भारतीय फार्मूला फिल्मों की तरह निर्धारित तरीके से घटित होता है। मुझे कहानी और उसके कहन दोनों ने ही आकर्षित नहीं किया। दैनिक अखबारों के रविवारीय संस्करणों में लगातार छपने वाले चतुर बच्चों के किस्सों सा ही यह भी एक किस्सा है।

'राजा के नियम की किताब' इस्मत ईमान द्वारा लिखी गई कहानी की पुस्तक है। इसके चित्र अैर कहानी आकर्षक कहे जा सकते हैं, यहां भी विषय कहानी के नायक राजकुमार की चतुराई है, पर कहानी के कहने में कल्पना की जो उड़ान है वह किताब को रोचक बना देता है। राजा की पुस्तक में हर चीज की संख्या निर्धारित है, एक जगह जहां दो ड्रैगन थे वहां ड्रैगन की संतान होने से संख्या तीन हो गई, जाहिर है राजा जो नियमों की पाबंदी का कायल था उसे यह तब्दीली पसंद नहीं आई। तब्दीली किसी भी व्यवस्था को पसंद नहीं आती। तब्दीलियां अपने साथ नई और असहज परिस्थितियां लाती हैं और व्यवस्था इतनी लोचदार नहीं होती कि इन परिस्थितियों के हिसाब से अपने को नया बना सके। तो राजकुमार को नन्हे ड्रेगन को मारने का हुक्म मिलता है। ड्रैगन के घर पर नन्हा ड्रैगन राजकुमार का आतिथ्य नींबू पानी के साथ करता है, ये एक नन्हे दुश्मन का मारक भोलापन है, राजकुमार में इतनी लोच है कि वह इस आतिथ्य का प्रत्युत्तर दोस्ती से देता है और इस तरह समस्या सुलझ जाती है। नन्हा ड्रेगन राजकुमार के दोस्त के रूप में किताब में जगह पा जाता है।

कोई भी बच्चा इस कहानी को इस तरह तो नहीं ही पढ़ेगा पर यह तो देखेगा ही, वयस्क लोग कैसे लकीर के फकीर होते हैं। और नन्हे लोग कैसे नई परिस्थितियों के हिसाब से अपने को नया कर लेते हैं, मेरी राय में किताब पर्याप्त कल्पनाशीलता और रोचक है।

तीसरी पुस्तक 'मेरा बगीचा, मेरे दोस्त', जयंती मनोकरन ने लिखी है, एक लड़की नये शहर में आई है, उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता, फिर उसे अपने बगीचे में होने वाली गतिविधियां, कलियों का निकलना, फूलों का खिलना, प्यूपा का तितली बनना रिझा लेते हैं। ठीक-ठीक किताब है, किताब का विषय आकर्षक है। पर उसकी कहानी और वर्णन सपाट और नीरस हैं।

'पोटली बाबा की कहानी' गुलजार की लिखी हुई अपेक्षाकृत बड़ी किताब है। विषय तो इसका भी पारंपरिक है लेकिन गुलजार

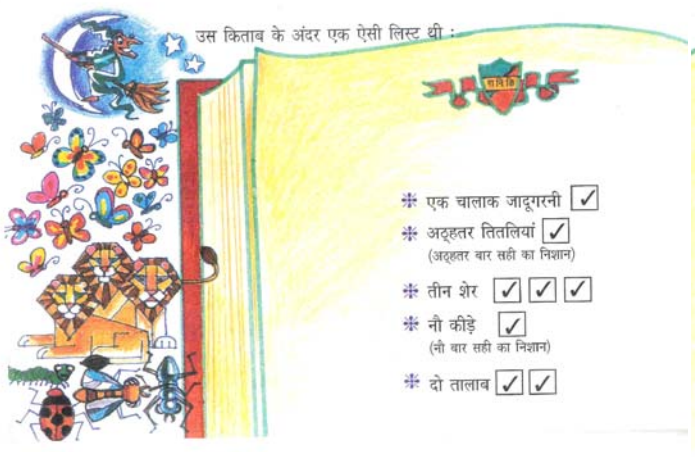

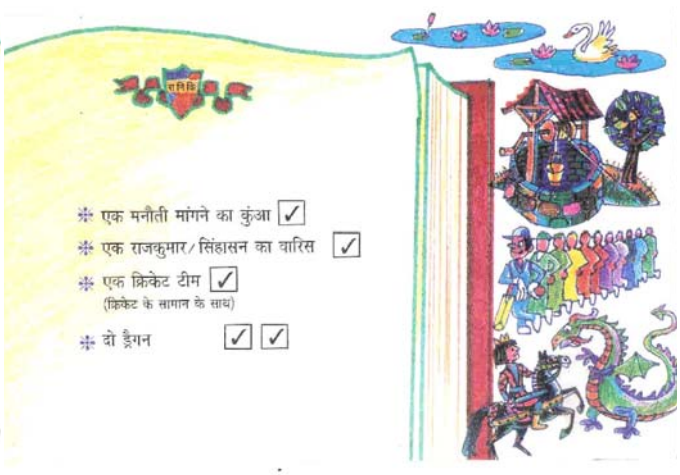

कि किस्सागोई इस किताब को पठनीय बना देती है।

'चिमनी दा ढाबा !' मिनि सुकुमारन नायर द्वारा लिखी किताब है। विषय रोचक है। एक छोटी बच्ची गांव से शहर आती है, किंतु शहर उसे अच्छा नहीं लगता। यहां न तो पेड़ है और न ही पेड़ों के पंछी। ये चिड़ियों के लिए दाना-पानी का इंतजाम करती है जिससे ढेर-ढेर पक्षी आते हैं और उसकी जिंदगी खुशगवार कर देते हैं, आगे कहानी वही पुराने ढर्रे पर खिसक जाती है। फिर भी पुस्तक रोचक और पठनीय है।

'बांकू चाय पीने वाला घोड़ा' सुभद्रा सेन गुप्ता की लिखी किताब है। किताब का विषय बड़ा रोचक है, एक घोड़ा है उसे चाय पीने का शौक है, उसका जोश, उसकी शरारत उसकी शान सब उसकी चाय तलबी की बदौलत है, एक दिन घर में चाय पत्ती खत्म होने से उसे चाय नहीं मिलती तो वह उदास हो जाता है। आखिरकार उसके मालिक को स्टेशन ले जाकर चाय पिलानी ही पड़ती है। क्या कहानी, क्या किस्सागोई, क्या चित्र सब मिलकर इसे एक बेहद रोचक कहानी बना देते हैं और चाय पीने वाले इस घोड़े का चित्र हमारे दिल में टांक देते हैं।

साहित्य की उद्देश्यपरक रचना कभी भी किसी को नहीं भाती या कम से कम साहित्य का आनन्द तो नहीं ही देती। उद्देश्यपरक रचना में घटनाओं की बुनावट में कृत्रिमता होती है जो विषय की सहजता को खत्म करता है। साहित्य यथार्थ से टकराता, कल्पना की उड़ानों में जाता और कुछ ऐसे अनुभवों को संजोने से ही साहित्य होता है जिसे पढ़ते हुए आमतौर पर कोई बच्चा या वयस्क माने कि उसे जानने समझने को कुछ नया मिला है।

'सोनू का सपना और आगे बढ़ना' ऐसी ही पुस्तक है। यह पुस्तक जेंडर संवेदनशीलता, सशक्तीकरण के तहत बालिका शिक्षा के लिए प्रयासों को ध्यान में रखकर लिखी गई है, जहां सोनू एक ऐसे दुश्चक्र को तोड़ने का प्रयास करती है जो महिला विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं। सब कुछ तयशुदा स्थितियों में घटित होता हुआ जान पड़ता है। साथ ही पुस्तक में बच्चों को पंचायती राज व्यवस्था का ज्ञान भी पहुंचाया गया है। महिला समता के मुद्दों को उठाना लाजमी है। लेकिन इनकी प्रस्तुति सहज रूप में कैसे हो यह विचारणीय मुद्दा है।

पोटली बाबा की कहानी, चिमनी दा ढाबा !, बांकू चाय पीने वाला घोड़ा पुस्तकों के इलस्ट्रेशन्स अच्छे हैं और पुस्तकों के मुद्रित अंश को रोचक एवं समझने में मददगार बनाते हैं।

इसी शृंखला में तीन पुस्तकें विज्ञान की हैं - प्रकाश, गुरुत्व एवं उपकरण : देखो और जानो। तीनों ही किताबें बिमान बसु द्वारा लिखी गई हैं। विज्ञान की पुस्तकें लिखना खास तरह की चुनौती प्रस्तुत करता है और यदि ये पुस्तकें 4 से 7 वर्ष के बच्चों के लिए हों तो चुनौती और भी बढ़ जाती है। पहली चुनौती तो यही है कि क्या विज्ञान की पुस्तकें बच्चों की उन जिज्ञासाओं को ध्यान में रखकर लिखी जाती हैं जिन्हें बच्चे आमतौर पर अपने आसपास को जानने के दौरान करते हैं ? ऐसे में यह जानने की आवश्यकता होगी कि इस उम्र में बच्चों की जिज्ञासाएं अपने आसपास के बारे में किस प्रकार की हैं या ये कहें कि उनमें अपने आसपास के प्रति जिज्ञासा कैसे पैदा की जाए ? यदि पुस्तकें बच्चों की जिज्ञासाओं को ध्यान में रखकर लिखी जाएं तो शायद कुछ भिन्न प्रकार से लिखी जाएंगी। दूसरी चुनौती है कि क्या जिन भी अवधारणाओं को बच्चों के लिए चुना गया है वे उस आयु वर्ग और उसके अनुरूप सीखने के मनोविज्ञान को ध्यान में रखकर लिखी गई हैं या कि किस उम्र में बच्चों को क्या सिखाया जा सकता है और क्या सिखाया जाना चाहिए ? विज्ञान की पुस्तकों में यह बात भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है कि क्या वे बच्चों के प्राप्त अनुभवों से जुड़ती हैं, बच्चों को जानने, समझने के उपकरणों से लैस करने में मदद करती हैं, क्या वे बच्चों में जानने के बुनियादी कौशल-अवलोकन, स्वयं करके देखना, किन्हीं व्यवस्थित अनुभवों से निष्कर्ष की ओर बढ़ना, तुलना आदि

गुरुत्व हर चीज़ को पृथ्वी से बांधता है

से ज्ञान सृजन में मदद करती हैं अथवा चंद जानकारियां देकर अपनी इतिश्री मान लेती हैं। विज्ञान में जब तक बच्चे स्वयं करके नहीं देखते तब तक जानकारियां तो संप्रेषित की जा सकती हैं लेकिन ज्ञान सृजन में समस्या ही रहेगी। और यदि यह नहीं है तो सिखाने में पुस्तकें फ्रेरे के शब्दों में ज्ञान की 'बैंकीय अवधारणा' से ज्यादा कुछ साबित नहीं होंगी।

प्रस्तुत प्रत्येक पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ पर एक वाक्य और एक रंगीन फोटोग्राफ है। शायद ही कोई कहेगा कि प्रकाश को बच्चों को नहीं जानना चाहिए। प्रकाश को बच्चे जानते हैं और शायद यह भी जानते हैं कि वह किस स्रोत से आ रहा है। कुछ जानकारियां इस पुस्तक में नई हो सकती है जैसे - कीट प्रकाश या नियोन लाइट, सोडियम लाइट, लेजर लाइट के नाम। लेकिन सोडियम लाइट, नियोन लाइट, लैम्प लाइट को अलग से दर्शाने

का कारण समझ नहीं आता। क्या वास्तव में वे अलग-अलग हैं? सभी में विद्युत के प्रवाह से प्रकाश उत्पन्न हो रहा है। प्रकाश के अलग होने के मोटे कारण हैं कि एक में यह प्रकाश विद्युत प्रवाह के साथ नियोन गैस की वजह से आ रहा है तो दूसरे में सोडियम गैस से। यदि इसी आधार पर इन्हें अलग किया जाना है तो प्रकाश के अनेक प्रकार और भी हो जाएंगे। जैसे - पत्थरों के टकराने से उत्पन्न प्रकाश, ऊनी वस्त्र को रगड़ने से उत्पन्न प्रकाश, रेडियम प्रकाश इत्यादि। फिर इन्हें क्यों इस पुस्तक में स्थान दिया गया है।

पृष्ठ 2 पर सूर्य प्रकाश है लेकिन सूर्य का कहीं अता-पता नहीं है। टैक्स्ट को पढ़कर ही पता चलता है कि यह सूर्य प्रकाश है। लेजर लाइट जैसी अवधारणाएं भी बच्चे कैसे समझेंगे क्योंकि वह पुस्तक में एक मकोड़े जैसी दिखती है और क्या इसे समझना इतना आसान है ? चन्द्र प्रकाश भी महानगर की जगमगाती लाइटों के बीच है और यहां भी टैक्स्ट ही मदद करता है कि बाकी लाइट्स को मत देखो। इसे देखो यह है चन्द्रप्रकाश। पुस्तक महानगरीय प्रकाश को बच्चे के सामने प्रस्तुत करती है। कहीं भी लालटेन, दीया (दीपक) या चूल्हे का प्रकाश क्यों नहीं है? पहले ही पन्ने पर

Light!

किसी बड़े मॉल का दृश्य है जिसमें आर्चीज, लॉंड्री मार्ट एवं कुत्ते के साबुन विज्ञापन के बीच से प्रकाश आ रहा है। क्या ग्रामीण बच्चे इसे अपने अनुभव से जोड़ पाएंगे?

गुरुत्व में सभी चीजें नीचे की ओर आती हैं। अब जो चीजें नीचे आती हैं वे हैं - बॉल, पानी का झरना, मोम, कलाबाज, पत्तियां आदि। भूकंप में गिरती इमारत का नीचे आना गुरुत्व के कारण हो सकता है लेकिन इसे यहां बच्चों को समझाना मुश्किल होगा। इसी प्रकार सैटेलाइट द्वारा यह समझाना कि 'गुरुत्व हर चीज को पृथ्वी से बांधता है', यह भी बच्चों के लिए आसान नहीं है।

किताब - उपकरण : देखो और जानो के प्रथम पृष्ठ पर कुछ उपकरण दिखाए गए हैं जो इस प्रकार हैं - स्केल, पेंसिल, ड्रॉपर, आवर्धक लैंस, कीप, चिमटी और रबर। अनेक बार बड़ों की यह धारणा होती है कि बच्चे शायद वे चीजें भी नहीं जानते जिन्हें वे रोजमर्रा की जिंदगी में काम लेते हैं। सब कुछ सिखा देने की चाह यहां जान पड़ती है। अब कौन बच्चा है जो स्केल, पेंसिल, रबर को नहीं जानता। शहर के मध्यमवर्गीय परिवारों में केरोसिन स्टोव एवं शहर में कांटेदार वृक्षों के अभाव में शायद बच्चे कीप और चिमटी का उपयोग भूल गए हों लेकिन ग्रामीण बच्चे इन्हें बखूबी जानते हैं। एक सवाल यह भी है कि क्या उपकरणों को अलग से सिखाए जाने की जरूरत है ? यदि बच्चे सीखने की प्रक्रियाओं में उपकरणों को काम में लेंगे तो उनके कार्य के बारे में भी सीख जाएंगे और नाम तो वे पहले से ही जानते हैं। तीनों ही किताबों में फोटोग्राफी जरूर दिलचस्प है।

पुस्तकों को देखते ही लगता है कि ये पुस्तकें चार-पांच वर्ष के बच्चों के लिए लिखी गई हैं। लेकिन ये भ्रम टूटता है जब किताब में लिखा दिखता है, आओ समझाता हूं ... और हर पुस्तक के अंत में कुछ प्रश्न दिए हुए हैं जो इस प्रकार हैं :

हम अंधेरे में क्यों नहीं देख सकते ?

शहर की रोड लाइट्स पीले रंग की क्यों दिखती हैं ?

गैस की बर्नर की लौ नीली क्यों दिखती है ? इत्यादि ।

यहां सवाल यह नहीं है कि प्रश्न क्यों हैं। क्योंकि सवाल तो जिज्ञासा उत्पन्न करने के लिए भी हो सकते हैं। लेकिन पुस्तकों की प्रस्तुति जिस आयुवर्ग के लिए है उसमें ये सवाल खटकते हैं। प्रश्नों के पीछे कहीं यह मंतव्य तो नहीं कि बच्चे के माता-पिता को भी अंत में कुछ ज्ञान दे दिया जाए।

इन विज्ञान की पुस्तकों की प्रस्तुति एवं संजोने के तरीके से विज्ञान का समाजशास्त्र दृष्टिगोचर होता है। ये पुस्तकें शहरी मध्यमवर्गीय बच्चों के लिए तैयार की गई हैं। मुझे समस्या यह भी लगती है कि प्रत्येक पुस्तक के आवरण - 2 पर लिखा है, ''रूम टू रीड का लक्ष्य समाज में शोषित व पिछड़े वर्ग के बच्चों को शिक्षा के अवसर प्रदान करना है।'' और ये पुस्तकें रूम टू रीड के उन पुस्तकालयों में जाएंगी जो दूर-दराज की गांव-ढाणियों में संचालित हैं और इन्हीं का जीवन इन पुस्तकों में नदारद है।

तीनों ही किताबें अंग्रेजी से अनुदित हैं। स्कॉलास्टिक प्रकाशन बहुराष्ट्रीय प्रकाशन संस्थान है और शायद बाजार की तलाश में ये पुस्तकें हमारे बच्चों तक पहुंच रही हैं। क्या किसी भी प्रकार से ये पुस्तकें बच्चे के ज्ञानात्मक क्षितिज में किसी भी प्रकार का इजाफा करेंगी। और अंत में एक बात। इन पुस्तकों का मूल्य भी इन्हें आम बच्चों की पहुंच से दूर ही रखेगा। पोटली बाबा की कहानी मूल्य 75 रुपये, बांकू चाय पीने वाला घोड़ा मूल्य 40 रुपये, चिमनी दा ढाबा ! मूल्य 40 रुपये। यदि इसे अन्य प्रकाशन संस्थानों (एनबीटी, सीबीटी) की तुलना में देखें तो गुणवत्ता एवं मूल्य दोनों ही दृष्टि से कहीं कमतर ठहरती हैं। ◆